आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2471 • उदयपुर, शुक्रवार 01 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

संस्थान द्वारा भटिंडा (पंजाब) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान इसके आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुंचाने का सेवा प्रारंभ की थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत हो रही है।

14 सितम्बर 2021 को एक राशन वितरण शिविर भटिंडा (पंजाब) में संपन्न हुआ। इसमें 45 परिवारों को राशन प्रदान किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान श्रीमान मोहनलाल जी वर्मा, अध्यक्ष श्रीमान अजीत सिंह जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान कमल जी, एवं श्रीमान् नवज्योत सिंह जी आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्रीमान् मुकेश जी शर्मा ने व्यवथाएं देखी। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

लखनऊ में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा लखनऊ शाखा में दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगजनो के लिये निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण के शिविर सम्पन्न किया। शिविर में दिव्यांग भाई–बहनों का जांच एवं 05 कृत्रिम अंग, 20 कैलीपर्स का वितरण किया गया । उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री वी.के. सिंह जी, अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा जी श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि श्री नवीन जी, श्री लक्ष्मण प्रसाद जी, श्री सुभाष चंद जी, श्री दिलीप जी (सभी समाजसेवी) आदि पधारे। संस्थान शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी ने संस्थान की स्थापना से लेकर अब तक 35 वर्षों में की गई सेवाओं का जिक्र किया।

उन्होंने बताया कि संस्थान अब तक 4 लाख से अधिक दिव्यांग के सफल ऑपरेशन कर भाई–बहनों को अपने पैरों पर खड़ा किया, संस्थान द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में निःशुल्क राशन किट वितरण किया जा रहा है। संस्थान द्वारा दिव्यांग निर्धन एवं बेसहारा लोगों के लिये निःशुल्क विविध सेवा प्रकल्प शुरू हैं। शिविर में बृजपाल सिंह जी (स्नेह मिलन प्रभारी), श्री रमेशचंद जी, श्री बद्रीलाल जी शर्मा (आश्रम प्रभारी) एवं नाथु सिंह जी ने सेवा दी।

अबोहर (पंजाब) में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की शाखा अबोहर (पंजाब) के तत्वावधान में गत 12 सितम्बर 2021 को दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता श्री बालाजी समाज सेवा संघ रहा। शिविर में 210 दिव्यांगों की ओपीडी, 39 का ऑपरेशन चयन, कैलिपर्स का माप एवम् कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री मान राजेन्द्रपाल जी (समाजसेवी), अध्यक्ष श्री गंगन जी मल्हौत्रा, (चैयरमेन बालाजी समाज सेवा संघ), विशिष्ट अतिथि श्री अमित भाई पधारे।

शिविर में डॉ एस.एल गुप्ता जी ने सेवाएं दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से श्री मान् मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), उपस्थित रहे।

अलीगढ़ व भायंदर में फिजियोथैरेपी शिविर

अलीगढ़ व मुम्बई में 29 अगस्त को संस्थान की स्थानीय शाखाओं की ओर से निःशुल्क फिजियोथैरेपी एवं जांच शिविर आयोजित किए गए। अलीगढ़ के विकास नगर में सम्पन्न शिविर में डॉक्टर अनिल कुमार जी व सतीश कुमार जी ने विभिन्न बीमारियों की जांच की एवं फिजियोथैरेपी द्वारा उनका उपचार किया। समाजसेवी राजेन्द्र जी वार्ष्णेय, कमल जी अग्रवाल व चन्द्रशेखर जी गुप्ता ने शिविर संचालन में सहयोग किया। भयन्दर (मुम्बई) शाखा की ओर से भी इसी दिन ओस्तवाल बगीची में निःशुल्क फिजियोथैरेपी शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में समाजसेवी कांतिलाल जी बाबेल, मुम्बई शाखा संयोजक कमल जी लोढ़ा व स्थानीय शाखा संयोजक किशोर जी जैन ने सेवाएं दी।

भयन्दर शाखा के प्रभारी मुकेश जी सेन ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि फिजियोथैरेपी केन्द्र में रोजाना 50 से अधिक लोग निःशुल्क फिजियोथैरेपी सुविधा का लाभ लेते हैं।

तृप्त पितर करते हैं कल्याण

तैतरीय उपनिषद के अनुसार मिट्टी से निर्मित मानव शरीर के विविध तत्वों का मृत्यु के बाद ब्रह्मण्ड में विलय हो जाता है, पर मोह के धागे नहीं छूटते। मरणोपरान्त भी आत्मा में मोह–माया का अतिरेक होता है और प्रेम ही उन्हें पितृपक्ष में धरती पर वंशजो के पास लाता हैं इन्हीं वंशजों के लिए श्रद्धापूर्वक जो किया जाता है, उसे ही श्राद्ध कहते हैं। श्रद्धा शब्द में 'श्रत्' अर्थात् सतय और 'धा' यानी धारण करना शामिल है। श्राद्ध का सरल अर्थ सत्य को धारण करना है, और जीवन का सबसे बड़ा सत्य 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्मण्ड' है। ऐसी मान्यता है कि आश्विन .ष्णपक्ष के पन्द्रह दिनों में (प्रतिपदा से अमावस्या तक) यमराज पितरों को मुक्त कर देते हैं ताकि वे अपने–अपने हिस्से का ग्रास लेने के लिए अपने वंशजों तक जा सकें। इससे उन्हें आत्मिक शांति प्राप्त होती है। पुत्र या पुत्री पर बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार तीन ऋण होते हैं– पितृऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण। मनुष्य लोक में माता–पिता विरासत के रूप में अपना सब कुछ पुत्र या पुत्री को दे जाते हैं, इसलिए इन्हें श्राद्ध पक्ष एक अवसर देता है कि वे पितरों को संतुष्ट कर ऋण उतार सकें। श्राद्ध पक्ष में पितरों का जल और अन्न से तर्पण करना चाहिए। इस दिन गरीबों व ब्राह्मणों को भोज कराकर दक्षिणा देने की प्रथा है।

श्राद्ध पक्ष में पितरों का जल और अन्न से तर्पण के साथ ही दीन–दुःखी की सेवार्थ दान से भी पितृ प्रसन्न होते हैं। जीव की शांति के लिए श्राद्ध पक्ष में जितना दान–पुण्य कर सकें, करना श्रेष्ठ है।

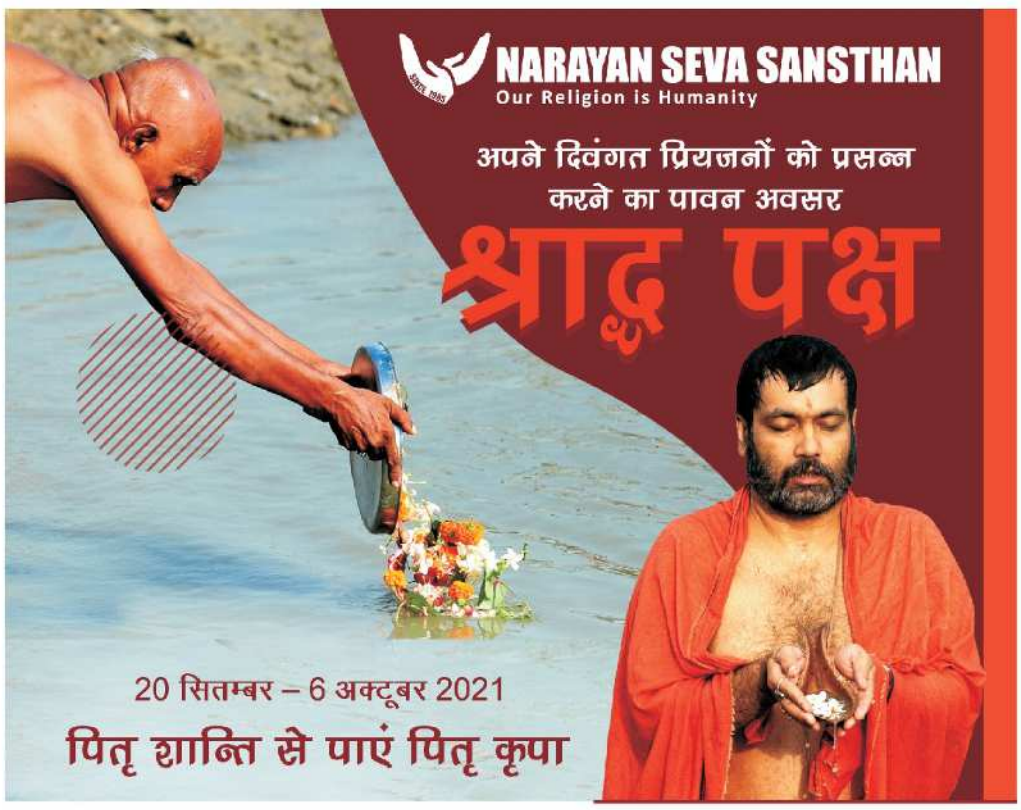

श्राद्ध तिथि ब्राह्मण भोजन सेवा ₹5100

श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा ₹11000

सप्तदिवसीय भागवत मूलपाठ, श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा ₹21000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number: 31505501196
IFSC Code: SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Paytm | UPI | yono SBI | SBI Payments

UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA

+91 294 662 2222 | +91 7023509999

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number: 31505501196
IFSC Code: SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay | PhonePe | Paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA

+91 294 662 2222 | +91 7023509999

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

नवरात्रि में पाएं मां दुर्गा की कृपा

नवरात्र यानि 9 विशेष रात्रियां। इस समय को शक्ति के 9 रूपों की उपासना का श्रेष्ठ काल माना जाता है। 'रात्रि' शब्द सिद्धि का प्रतीक है। प्रत्येक संवत्सर (साल) में 4 नवरात्र होते हैं जिनमें, दो बार नवरात्रों में आराधना का विधान है।

विक्रम संवत के पहले दिन अर्थात् चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) से 9 दिन यानी नवमी तक नवरात्र होते हैं। (इस साल यह 7 से 15 अक्टूबर 2021 तक है) ठीक उसी तरह 6 माह आश्विन मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी यानी विजयादशमी के एक दिन पूर्व तक देवी की उपासना की जाती है। सिद्धि और साधना की दृष्टि से शारदीय नवरात्र में लोग आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति के संचय, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग–साधना आदि अनुष्ठान करते हैं।

देवी (शक्ति) की उपासना आदिकाल से चली आ रही है। वस्तुतः श्रीमद्देवी भागवत महापुराण के अंतर्गत देवासुर संग्राम का विवरण दुर्गा की उत्पत्ति के रूप में उल्लेखित भी है।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

फेफड़ा खाली है, अब तक तो माता के गर्भ से जुड़े रहे। नाभि से माता की नाल लगी रही पेट की। जैसे ही नाल को काट दिया, फेफड़े खाली हैं ऑक्सीजन चाहिये ऑक्सीजन चाहिये, रोना ही चाहिये।

जो बच्चे यहाँ आये हैं, हम देख रहे हैं बच्चे, कई बच्चे इनमे से पैदा होते ही रोये नहीं थे।

जन्म लेते ही रोये नहीं थे। सैरेबल पाल्सी हो गई, सी.पी. हो गई। इनके पैर टेढ़े हो गये, नसें सन्नीपात में आ गई। इनकी नसें कौमा में आ गई। इनकी नसें, सैरेब्रल पाल्सी का मतलब ही यही है कि सैरीब्रल यानी मस्तिष्क का पिछला अंग पेरेलाईसिस हो गया।

ना ना ना रोते हुए तो आना ही चाहिये। ये हमारे हाथ में नहीं है। वो तो प्र.ति रूला देती है, परन्तु बाद में जीवनभर रोते रहते हैं। मेरी गाड़ी बढ़िया चाहिये, उसकी गाड़ी बढ़िया, मेरी गाड़ी हल्की। क्या है? आज से सन्तुष्टः सतत् योगी हो जावे। आज से कर्मण्ये वाधिकरस्ते का मनन कर लें।

रेल चली रे भैया, रेल चली।
महाक्रांति की ये रेल चली।।
पहला दया नाम का स्टेशन।

सम्पादकीय

विश्वास यों तो एक सामान्य सा शब्द है किन्तु जब यह जीवन में उतरता , रचता व बसता है तो यह रंगत ही बदल देता है। विश्वास की शुरूआत स्वयं से होती है। यदि स्वयं पर, स्वयं की क्षमता पर, स्वयं के सोच– विचार पर विश्वास है तो व्यक्ति आत्मविश्वासी होकर एक सुदृढ़ मानव के रूप मे अपने आपको स्थापित कर पाता है। फिर विश्वास और पर भी सरल हो जाता है। क्योंकि जिसे स्वयं पर ही विश्वास नहीं वह दूसरों पर क्या विश्वास करेगा ? जब खुद पर विश्वास हो, दूसरों पर विश्वास हो तभी तो कहा जाता है कि विश्वास पर दुनिया कायम है। यह विश्वास जब और विस्तृत होता है तो हमें परमात्मा पर विश्वास होने लगता है।

हमें सफलता मिले या असफलता किन्तु परमात्मा पर विश्वास न डगमगाये , तभी विश्वास का पूर्ण फलन होता है। ऐसा बहुविश्वासी व्यक्ति ही सच्चे अर्थो में मनुष्य होता है।

कुछ काव्यमय

विश्वास एक भाव बिन्दु है
जहाँ से निकलती है
सफलता ही गंगा।
विश्वास खुद पर भी हो
औरो पर भी हो तो
रिश्तें बन जाते हैं चंगा।

- वरदीचन्द राव

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सामान खाली होते ही ट्रक ड्राइवर को भाड़ा चुकाया। ड्राइवर ने कुछ कागजात सौंपे जो मफत काका ने भेजे थे, एक कागज पर सामान पावती की रसीद लेकर ट्रक लौट गया। अब सड़क की दोनों तरफ कार्टन, बोरियां व लोग बच गये। ट्रक के जाने से ऐसा अहसास हो रहा था जैसे घर खाली कर सामान सड़क पर रख दिया हो। अब इस सामान को शीघ्र अलग अलग स्थानों पर पहुँचाना था। कैलाश का घर एकदम सामने था, शुरूआत वहीं से की गई। कैलाश ने अपने घर का पलंग बाहर निकाल दिया था जिससे बहुत जगह हो गई थी। सर्वप्रथम ये कार्टन ही पलंग की जगह इस तरह जमाये कि ये पलंग का भी काम कर दे। कार्टन जमने के बाद कैलाश ने अपने सोने का बिस्तर जब उस पर लगा दिया तो सब हंस पड़े। ट्रक वाले ने जो कागजात दिये थे उनमें एक सर्टिफिकेट था। इस क्षेत्र के तहसीलदार से पुष्टि करवा कर भेजना था कि सामान प्राप्त करने की अवधि के 6 माह के भीतर भीतर सामान गरीबों में वितरित हो गया है। जहां तहसीलदार नहीं हो वहां एस. डी.ओ. या ए.डी.एम. से सर्टिफिकेट लेना होता था। यह इसलिये जरूरी था क्यूंकि ये तमाम कागजात मुम्बई बन्दरगाह स्थित कस्टम कार्यालय में सौंपने पड़ते थे अन्यथा भारी सीमा शुल्क अदा करना पड़ता था।

धीरे धीरे समूचा सामान पहले से चयनित स्थानों पर रखवा दिया। यह कार्य करते पूरा दिन निकल गया, सभी साथी थक कर चूर हो गये तो सभी को धन्यवाद दे अपने अपने घर जा आराम करने को कहा।

सामान तो आ गया मगर सत्तू बनाने और इसे वितरित कराने का विशुद कार्य अभी भी बाकी था। यह तो महज शुरूआत थी। सारे काम का कैलाश को अच्छा खासा अनुभव था इसलिये किसी प्रकार के संदेह या उहापोह की स्थिति अब नही थी। कोलोनी में कई स्थानों पर खुली जगहें थी, कहीं भी सत्तू बनाने का काम किया जा सकता था। एक बड़े से गोदाम के बाहर काफी खुली जगह थी। इसे ही चुन कर यहां चूल्ह खुदवाने का कार्य शुरू किया। एक टेन्ट हाउस वालों ने बड़ा सा कढाह निःशुल्क ही दे दिया। इस कढाह के अनुसार ही भट्टी की खुदाई की। सत्तू हिलाने के लिये बड़े बड़े खुरपों की आवश्यकता थी, ये पड़ौस में ही डेरा डाले गाडोलिया लौहारों से बनवा लिये।

अंश - 125

अपनों से अपनी बात

एक अच्छा अवसर है

भगवान बुद्ध उन दिनों अपरिग्रह में लोक शिक्षण कर रहे थे। अपव्यय और संग्रह की सर्पकुण्डली से लक्ष्मी को निकालने के लिए यह उपदेश समय की दुहरी आवश्यकता पूरी कर रहे थे। बहुतों ने अपना संग्रह परमार्थ के लिए बौद्ध विहारों को दान कर दिया।

परन्तु एक धनाढ्य व्यक्ति अर्थवसु पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने अपने संग्रह से कानी–कौड़ी भी दान नहीं की। एक धनाढ्य की, यह कृपणता जन–जन की चर्चा का विषय बन गई।

अपने बच्चों के लिए भी वह धन खर्च न करता था। बच्चे भी दुःखी रहते, पर अर्थवसु मौन रहता।

सभी को उसका यह व्यवहार अटपटा लगता।

बहुत दिन बीत गये। नालन्दा विश्व–विद्यालय की नींव रखी गयी। निर्धनों को सुविधा प्रदान करना

तात्कालिक श्रेय था परन्तु ज्ञान आलोक के अभाव में दरिद्रता से छुटकारा कैसे मिलेगा? अर्थवसु कुछ ऐसा ही सोच रहे थे। जो संग्रह उन्होंने किसी को नहीं सौंपा आज उसके उपयोग का अवसर आया था। एक दिन लोगों ने सुना कि उन्होंने अपनी सारी सम्पदा दान कर दी।

तथागत बुद्ध इस आकस्मिक निर्णय पर चकित हुए। जब उन्होंने अर्थवसु को इस निर्णय के बारे में पूछा तो उन्होंने एक ही उत्तर दिया। सर्वोत्तम कार्य के निष्पादन के लिए ही मैं कृपणता अपनाते रहा। मैं निष्ठुर नहीं था – उपयुक्त अवसर ही तलाश में था।

कहीं हम भी इसी तरह "एक अच्छे अवसर को तो नहीं तलाश रहे हैं।"

आइये, एक अच्छा अवसर आप का इन्तजार कर रहा है। ऐसा न हो कि हमें फिर अवसर न मिले।

– कैलाश 'मानव'

तूफान में आराम

समस्या का मुकाबला धैर्य और चतुराई से करना चाहिए। समस्याओं का यदि पूर्वानुमान लगाकर कार्य का क्रियान्वयन पहले ही कर लिया जाए तो वास्तविक समस्या उत्पन्न होने पर व्यक्ति को ज्यादा परेशान नहीं होना पड़ता है।

किसी ऊँची पहाड़ी पर एक किसान का खेत था, जहाँ आँधी–तूफान तथा तेज हवाएँ अपेक्षाकृत ज्यादा ही आते थे। उसे एक मजदूर की जरूरत थी, जो उसके खेत पर कार्य कर सके, परंतु इतनी ऊँचाई पर कार्य करना आसान नहीं था, अतः जो भी कोई आता, थोड़े दिन मजदूरी करता और चला जाता।

भाग्य से उसे एक दुबला–पतला सा मजदूर मिला जो उसके यहाँ काम करने के लिए राजी हो गया, परंतु उस मजदूर ने एक शर्त रख दी। मजदूर ने किसान से कहा–मेरी शर्त यह है कि जब भी तेज आँधी–तूफान आएँगे, मैं बिल्कुल कार्य नहीं करूँगा। अगर आपको यह शर्त मंजूर हो तो मैं आपके यहाँ कार्य करने को तैयार हूँ। किसान ने सोचा और कोई मिल नहीं रहा है, जो मिला उसी से काम चला लेते हैं। इस प्रकार किसान ने उव मजदूर को काम पर रख लिया। मजदूर खेत पर दिन–रात बहुत मेहनत से काम करने लगा। किसान मजदूर के कार्य से प्रसन्न हो गया कि मजदूर अच्छा और मेहनती मिला है। एक रात्रि को जब किसान सो रहा था तो उसनने बहुत तेज आँधी–तूफान की आवाज सुनी और वह जाग गया। उसने देखा कि उसके चारों तरफ सारा सामान अस्त–व्यस्त हो गया था। अचानक उसे अपने खेत–खलिहान का ध्यान आया और वह दौड़कर अपने खेत पर उस मजदूर के पास गया। मजदूर उस समय गहरी नींद में सो रहा था। किसान ने मजदूर को आवाज देकर उठाया, परंतु वह नहीं उठा। तब किसान ने उसे जोर से झकझोरा। इस पर मजदूर उठ गया। किसान ने मजदूर से कहा–इतना तेज तूफान आ रहा है और तुम आराम से सो रहे हो! जल्दी जाओ और धान को अच्छे से बांधकर गोदाम में रख दो तथा मवेशियों को भी बाड़े में सुरक्षित बाँध दो।

किसान की बात सुनकर मजदूर ने अपनी शर्त दोहरा दी–मालिक, मैंने कहा था ना कि जब तेज आँधी–तूफान आएँगे, तब मैं बिल्कुल काम नहीं करूँगा। मैं अभी सो रहा हूँ, मुझे सोने दीजिए। मजदूर पुनः सो गया। किसान भाग कर अपने खेत पर गया और वहाँ का दृश्य देखकर चौंक गया।

अनाज पहले से ही बाँध कर सुरक्षित ढंग से भण्डार–गृह में रखा जा चुका था, मवेशी सुरक्षित बाड़े में बाँधे जा चुके थे तथा सारा सामान पहले ही व्यवस्थित किया जा चुका था। यह देखकर किसान का मन खुशी से गद्गद् हो गया। दूसरे दिन किसान ने मजदूर को बहुत–बहुत धन्यवाद देते हुए कहा–मैं तो नाहक ही परेशान हो रहा था, तुमने तो सारी व्यवस्थाएँ पहले ही कर ली थी। तब मजदूर का उत्तर था–

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी,
बहुरी करेगा कब?

– सेवक प्रशान्त भैया

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
601 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

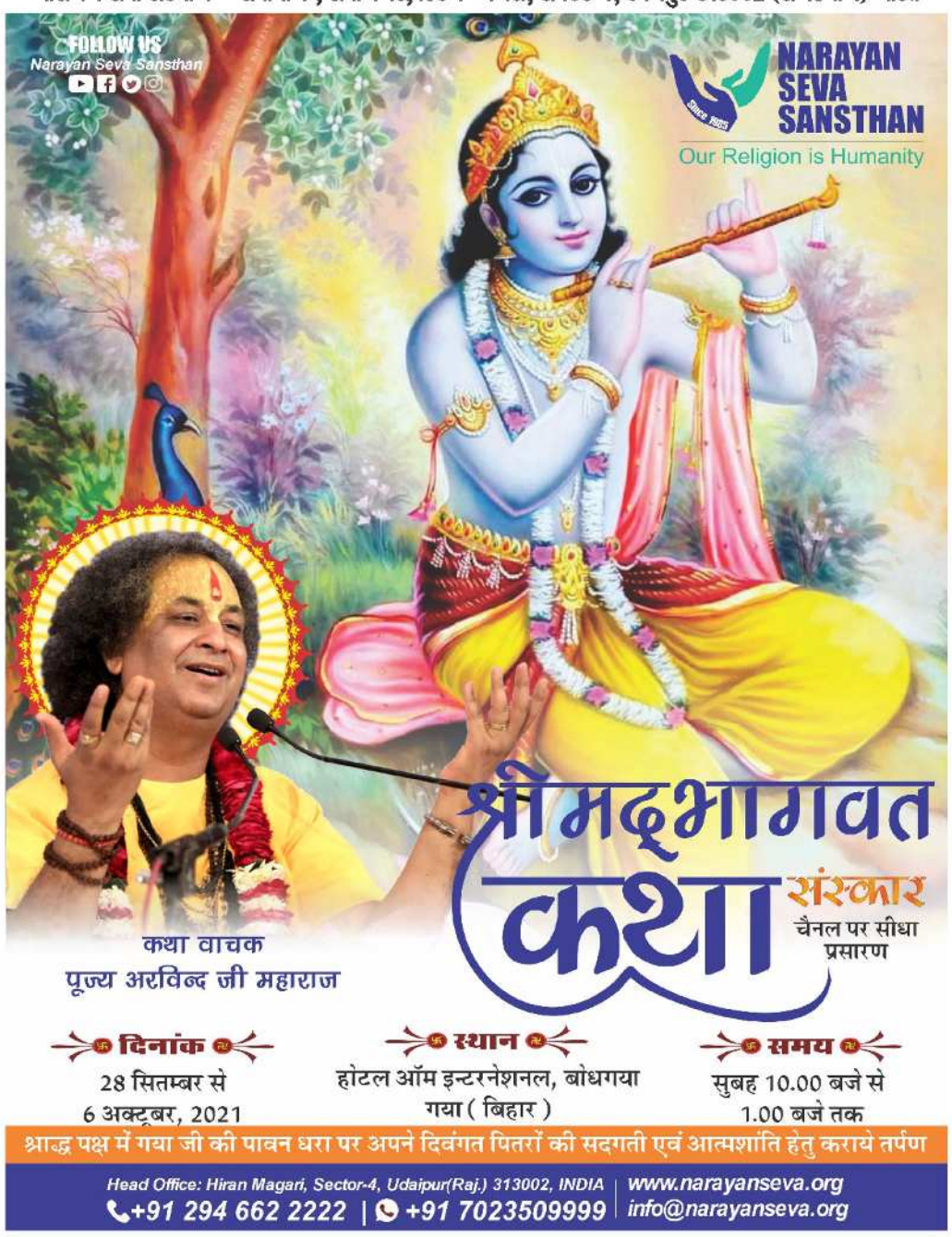

अनुभव अमृतम्

तीन–चार बार चिट्ठी लिखी। पहले के आईपीओ साहब ने ध्यान नहीं दिया, एडिशनल चार्ज था। आपको वहाँ जाना है, बहुत गड़बड़ हो रहा है। जमादार ने कहा– साहब वहाँ मत चलिये। पहले तो इस्पेक्टर साहब भी नहीं जाते थे। सामने वाला व्यक्ति छः–छः कत्ल कर चुका है, बन्दूक रखता है, डराता है। बहुत गड़बड़, बहुत गड़बड़, बहुत गड़बड़ हुई तो क्या हुआ अपनी तो ड्यूटी हुई। अरे! वहाँ जाना ही पड़ेगा, जमादार साहब चलना ही पड़ेगा। सर सर मैंने तो मना किया है, लेकिन आपकी आज्ञा होगी तो चलूंगा। डर लग रहा है। अरे! डर किस बात का? गये ताला बंद पोस्ट ऑफिस का। चाबी कहाँ है, चाबी कहाँ है? अरे! साहब चाबी नहीं देते, ताला बंदकर के बैठ गये– दो दिन से। ताला बंद है लोग आते है मनीआर्डर करने, अपने सेविंग बैंक में से अपना पैसा निकालने। लोग आते है पेन्शन लेने, मनीआर्डर आया हुआ है। बीस दिन हुए है पेन्शन आयी हुई है लेकिन ताला बंद है। दो दिन से ताला बंद, पहले वाले पोस्टमास्टर साहब मनीआर्डर नहीं भेजते थे। विधवाओं के मनीआर्डर। अरे! कोई ताला खोलने वाला हो तो बुलाओ। सर, आपको लिख के देना होगा नहीं तो ताला खोलेगा नहीं वो। पुलिस का मामला है– डर लगता है। भारत सरकार का मामला है। अरे! मैं लिखकर देता हूँ ना इस्पेक्टर ऑफ पोस्ट ऑफिस, झालावाड़ कैलाशचन्द्र अग्रवाल। लिखके देता हूँ, छाप लगा देता हूँ आईपीओ। ताला वाला आया, बड़ी मुश्किल से ताला खेला, नई चाबियाँ बनाई। पोस्ट आफिस में गये चारों तरफ कचरा ही कचरा, नाली बदबूदार, पोस्टमास्टर साहब की टेबल बिखरी हुई।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 245 (कैलाश 'मानव')

कुद्दू के आटे में 3 पाचक रस जो पित्त का शमन करते

चरक संहिता के अनुसार कुट्टू के आटे में जिंक, आयरन, मैग्निशियम, फैट, अमीनो एसिड और विटामिन्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसमें कटु, तिक्त और कषाय रस होते हैं, जो खाने में अरूचि को दूरकर पित्त का शमन करते हैं। मौसम, व्रत और त्योहार के अनुसार ये पाचनतंत्र के कार्य को सुचारू रखते हैं। इनमें कई तरह के सूक्ष्म पोषक तत्व भी होते हैं।

खट्टी डकार व पेट की जलन में गुणकारी छाछ

छाछ पाचन तंत्र को दुरस्त रखती है। आयुर्वेद विशेषज्ञों के अनुसार बिना मक्खन की ताजा छाछ एसिडिटी, खट्टी डकार व पेट की जलन सही करती है। इसमें थोड़ा सेंधा नमक डालकर पीएं। मक्खन वाली, लस्सी व दही की श्रेणी में आती है, जिसमें फैट अधिक होता है। इससे कम लाभ मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023